रचना से
रचना तक

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैया'

रचना से रचना तक पुस्तक में डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैया' के सैंतीस उत्कृष्ट समीक्षात्मक निबंध संकलित हैं जो प्रतिनिधि रचनाकारों की प्रतिनिधि रचनाओं के विवेचन–विश्लेषण और मूल्यांकन पर आधृत हैं।

रचना से रचना तक संग्रह के 'गणदेवता' से 'साँड' तक की उपन्यास यात्रा हिन्दी कथा साहित्य के विकास की यात्रा कही जा सकती है। 'भूले बिसरे चित्र' में सन् 1880 से सन् 1930 तक का भारत अंकित है और 'गणदेवता' में सन् 1925 से सन् 1945 तक के चित्र हैं। 'राग दरबारी' और 'साँड' सातवें–आठवें दशक की रचनायें हैं जो स्वतंत्र भारत के आन्तरिक सत्य का साहसिक बोध कराने में सक्षम हैं। अन्य उपन्यास ऐतिहासिक, आंचलिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर केन्द्रित हैं जिनका अपना अलग महत्व है। कुल मिलाकर इनमें लगभग एक शताब्दी का जीवन संकलित है जहां हम विकास की उपलब्धियों और विसंगतियों की झलप पा सकते हैं।

'निशीथ' गुजराती के प्रतिष्ठित कवि श्री उमाशंकर जोशी के आत्म–विस्तार की रचना है जो काव्य–परम्परा की विशिष्टताओं को आत्मसात किये हुए युग–जीवन के स्वरों को भविष्य का मंत्र बनाने के लिए निष्ठावान प्रतीत होती है।

बच्चन और अंचल छायावादोत्तर युग के सशक रचनाकार हैं जो युग की विद्यमान धारा में साथ रहकर भी अपने–अपने शिल्प के एक–दूसरे से बहुत कुछ दूर हैं। अज्ञेय नई कविता के अधिष्ठाता माने जाते हैं। प्रमोद वर्मा प्रगतिशील धारा के कवि और विचारक हैं। अशोक वाजपेयी अपनी विशिष्ट शिल्प और मुद्रा के कारण चर्चित रहे हैं। श्रीकान्त जोशी भी स्थापित कवि हैं। इन तीनों की रचनाओं में काव्य के अद्यत रूप की झलक देखी जा सकती है। इनके अलावा अन्य कवियों की कृतियां भी सम्मिलित हैं जो काव्य के बहुआयामी और बहुव्यापी संसार से जोड़ती हैं।

इनके अतिरिक्त अपने–अपने युग की दो प्रतिनिधि नाट्य कृतियां भी हैं जो अपनी नवीन टेकनीक से समग्र का प्रतिनिधित्व कराती हैं।

सभी कृतियां और कृतिकार जाने–पहचाने हैं। उनकी ये कृतियां साहित्य संसार की बानगी मात्र हैं।

रचना से रचना तक के समीक्षात्मक निबंधों में डॉ. बरसैया की विषय की व्यापकता, प्रतिपादन की अभिनवता, विवेचन–विश्लेषण की गहनता एवं स्पष्टता, संयत और प्रभावपूर्ण भाषा–शैली सर्वत्र परिलक्षित है।

मूल्य : 300.00 रुपये

ISBN 81-8160-035-5

रचना से रचना तक

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

रचना से रचना तक

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

ISBN : 81-8160-035-5

© डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
संस्करण : 2005

प्रकाशक
सार्थक प्रकाशन
100ए, गौतम नगर,
नई दिल्ली-110 049
दूरभाष : 26 56 73 17

लेज़र कम्पोजिंग
सिटी कम्प्यूटर्स
गंगा विहार, दिल्ली-110 094

मुद्रक
बालाजी ऑफसेट,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

मूल्य : तीन सौ रुपए

Rachna Se Rachna Tak
(Chiticism)
by Dr. Ganga Prasad Gupta

Price : 300.00

अपनी बात

सातवें दशक में एक विचार मेरे मन में आया कि हिन्दी के पुरस्कृत ग्रंथों पर एक समीक्षात्मक पुस्तक तैयार की जाये। उस समय ज्ञानपीठ पुरस्कार की चर्चा बहुत थी। उद्देश्य यह भी था कि हर रचना का विश्लेषण उसके रचनात्मक ताने-बाने को आधार बनाकर किया जाये अर्थात् रचना-कौशल के माध्यम से रचना के मर्म का उद्घाटन। इसीलिए पुस्तक का नाम रखा 'रचना से रचना तक'। किन्तु उसका प्रारम्भ ही दुर्भायपूर्ण रहा। हुआ यह कि लगभग दस ग्रंथों की विस्तृत समीक्षा तैयार कर प्रकाशक को भेजी। प्रकाशक ने छापने की बजाय पूरी पाण्डुलिपि ही गुमा दी। इसी बीच मेरा स्थानान्तरण ऐसी जगह हो गया जहां पुस्तकें उपलब्ध नहीं थीं। हालत यह थी कि प्राइमरी कक्षाओं की पुस्तकें भी बाहर से मंगानी पड़ती थीं। स्थानान्तरण में पुराने आलेखों की प्रतियां भी इधर-उधर हो गईं। फलतः योजना धरी की धरी रह गई। बावजूद इसके 'रचना से रचना तक' शीर्षक मस्तिष्क में गूंजता रहा। बीज स्वस्थ और जड़ मजबूत हो तो पौधे के अंकुराने-बढ़ने की संभवना बनी रहती है। कुछ ऐसा ही हुआ और एक बार फिर इधर-उधर बिखरे तिनके एकत्र किये, कुछ नये जोड़े और नये संकल्प के साथ यह ग्रंथ तैयार हुआ।

शहरी लोगों को यह बात अविश्वसनीय लगेगी कि मध्यप्रदेश में अभी भी अनेक जिला मुख्यालय ऐसे हैं जहां साहित्यिक पुस्तकों के विक्रेता नहीं है। हायर सेकेंडरी तक की पुस्तकें तो मिल जायेंगी किन्तु कालेज की पाठ्य पुस्तकें तक उपलब्ध नहीं है। फलतः चाहकर भी नवीनतम साहित्यिक पुस्तकें प्राप्त नहीं हो पाती। प्रकाशन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। लेखक अपना पैसा खर्च करके भी पुस्तकें नहीं छपवा पाते। प्रकाशक उनका भरपूर शोषण करते हैं। तथाकथित शहरी विद्वान ग्रामीण लेखकों का नामोल्लेख करने में भी संकोच करते हैं। उनके बड़प्पन के मानदंड अलग ही होते हैं। ऐसी दुखद स्थितियों से हजारों लेखकों, साहित्य-प्रेमियों को गुजरना पड़ता है। जब यह स्थिति जिला मुख्यालयों की है तो दूरस्थ ग्रामीण रचनाकारों की स्थिति का अनुमान ही लगाया जा सकता है।

संग्रह के आलेख पुराने भी हैं और नये भी, जो समय-समय पर लिखे और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। कई आलेख अप्रकाशित भी हैं। इनका कोई क्रम नहीं है, कोई सुनियोजित योजना नहीं है। लम्बे अन्तराल के

अपनी बात

सातवें दशक में एक विचार मेरे मन में आया कि हिन्दी के पुरस्कृत ग्रंथों पर एक समीक्षात्मक पुस्तक तैयार की जाये। उस समय ज्ञानपीठ पुरस्कार की चर्चा बहुत थी। उद्देश्य यह भी था कि हर रचना का विश्लेषण उसके रचनात्मक ताने-बाने को आधार बनाकर किया जाये अर्थात् रचना-कौशल के माध्यम से रचना के मर्म का उद्घाटन। इसीलिए पुस्तक का नाम रखा 'रचना से रचना तक'। किन्तु उसका प्रारम्भ ही दुर्भाग्यपूर्ण रहा। हुआ यह कि लगभग दस ग्रंथों की विस्तृत समीक्षा तैयार कर प्रकाशक को भेजी। प्रकाशक ने छापने की बजाय पूरी पाण्डुलिपि ही गुमा दी। इसी बीच मेरा स्थानान्तरण ऐसी जगह हो गया जहां पुस्तकें उपलब्ध नहीं थीं। हालत यह थी कि प्राइमरी कक्षाओं की पुस्तकें भी बाहर से मंगानी पड़ती थीं। स्थानान्तरण में पुराने आलेखों की प्रतियां भी इधर-उधर हो गईं। फलतः योजना धरी की धरी रह गई। बावजूद इसके 'रचना से रचना तक' शीर्षक मस्तिष्क में गूंजता रहा। बीज स्वस्थ और जड़ मजबूत हो तो पौधे के अंकुराने-बढ़ने की संभवना बनी रहती है। कुछ ऐसा ही हुआ और एक बार फिर इधर-उधर बिखरे तिनके एकत्र किये, कुछ नये जोड़े और नये संकल्प के साथ यह ग्रंथ तैयार हुआ।

शहरी लोगों को यह बात अविश्वसनीय लगेगी कि मध्यप्रदेश में अभी भी अनेक जिला मुख्यालय ऐसे हैं जहां साहित्यिक पुस्तकों के विक्रेता नहीं है। हायर सेकेंडरी तक की पुस्तकें तो मिल जायेंगी किन्तु कालेज की पाठ्य पुस्तकें तक उपलब्ध नहीं है। फलतः चाहकर भी नवीनतम साहित्यिक पुस्तकें प्राप्त नहीं हो पाती। प्रकाशन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। लेखक अपना पैसा खर्च करके भी पुस्तकें नहीं छपवा पाते। प्रकाशक उनका भरपूर शोषण करते हैं। तथाकथित शहरी विद्वान ग्रामीण लेखकों का नामोल्लेख करने में भी संकोच करते हैं। उनके बड़प्पन के मानदंड अलग ही होते हैं। ऐसी दुखद स्थितियों से हजारों लेखकों, साहित्य-प्रेमियों को गुजरना पड़ता है। जब यह स्थिति जिला मुख्यालयों की है तो दूरस्थ ग्रामीण रचनाकारों की स्थिति का अनुमान ही लगाया जा सकता है।

संग्रह के आलेख पुराने भी हैं और नये भी, जो समय-समय पर लिखे और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। कई आलेख अप्रकाशित भी हैं। इनका कोई क्रम नहीं है, कोई सुनियोजित योजना नहीं है। लम्बे अन्तराल के

गर्द-गुबार का प्रभाव भी इन पर पड़ा होगा क्योंकि आज की दुनिया की गति बहुत तेज है। पहले बारह वर्ष का युग होता था, अब बारह महीने में दुनिया बदल जाती है। लिखे गये लेख ज्यों का त्यों दिये गये हैं। मैंने उनमें कोई परिवर्तन नहीं किया।

संग्रह के 'गणदेवता' से 'साँड़' तक की उपन्यास यात्रा हिन्दी कथा साहित्य के विकास की यात्रा कही जा सकती है। 'भूले बिसरे चित्र' में सन् 1880 से सन् 1930 तक का भारत अंकित है और 'गणदेवता' में सन् 1925 से सन् 1945 तक के चित्र हैं। 'राग दरबारी' और 'साँड़' सातवें-आठवें दशक की रचनायें हैं जो स्वतंत्र भारत के आन्तरिक सत्य का साहसिक बोध कराने में सक्षम हैं। अन्य उपन्यास ऐतिहासिक, आंचलिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर केन्द्रित हैं जिनका अपना अलग महत्व है। कुल मिलाकर इनमें लगभग एक शताब्दी का जीवन संकलित है जहां हम विकास की उपलब्धियों और विसंगतियों की झलक पा सकते हैं। वे विषय और शिल्प के परिवर्तित स्वरूप के भी साक्षी हैं। 'गणदेवता' में प्रेमचन्द्र के 'गोदान' का रूप देखा जा सकता है। ज्ञातव्य है कि 'गणदेवता' प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित उपन्यास है जो बंगला भाषा से हिन्दी में रूपान्तरित है।

काव्य मानव जीवन का आदि साक्षी और संगी है। कवि मनीषियों ने मानव के सुख-दुखात्मक स्वरों को सार्वजनिक रूप देने की चेष्टा प्रारंभ से की है। कवि का प्रातिभ सामर्थ्य काल-अन्तराल को लांघकर अक्षुण्य बना रहता है बशर्ते उसमें युग-स्वर बनने की क्षमता हो। इसके लिए कवि का आत्म-विस्तार आवश्यक है।

'निशीथ' गुजराती के प्रतिष्ठित कवि श्री उमाशंकर जोशी के आत्म-विस्तार की रचना है जो काव्य-परम्परा की विशिष्टताओं को आत्म सात किये हुए युग-जीवन के स्वरों को भविष्य का मंत्र बनाने के लिए निष्ठावान प्रतीत होती है। मूल गुजराती की यह काव्य-कृति भी ज्ञानपीठ पुरस्कार से अलंकृत होकर हिन्दी में रूपान्तरित है।

बच्चन और अंचल छायावादोत्तर युग के सशक्त रचनाकार हैं जो युग की विद्यमान धारा में साथ रहकर भी अपने-अपने शिल्प में एक-दूसरे से बहुत कुछ दूर हैं। कभी बच्चन ने 'मधुशाला' की अनुभूति के बाद गांधी की सूत-माला के गीत भले गाये हों, पर बाद में आत्म-विश्लेषण का गांभीर्य प्रमुख बन गया। चाहे वह 'बहुत दिन बीते' की आकलनात्मक मुद्रा में व्यक्त हो अथवा 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' और 'नीड़ का निर्माण फिर' आदि के व्यंजना-शिल्प में। अंचल की उद्दाम लालसा भी बाद में 'मधु केवल मधुसूदन में' जैसे स्वरों द्वारा नियति को स्वीकारने लगी थी और वहां भी जीवन का हिसाब-किताब प्रस्तुत किये जाने की भावना स्पष्ट है। किन्तु दोनों कवियों की रचनाओं में युग-बोलों की ध्वनि सुनी जा सकती है जो काव्य-विकास का बोध कराती हैं।

अज्ञेय नई कविता के अधिष्ठाता माने जाते हैं। 'तार सप्तक' के बाद उन्होंने अनेक कृतियों के द्वारा जो भी दिया उसमें प्रयोग के अनेक आयाम हैं। 'हरी घास'

से लेकर 'सागर' तक की यात्रा करने वाले अज्ञेय भी अन्तर्मुखी हो चले थे। 'क्योंकि मैं जानता हूं' में उनकी जीवन-दृष्टि और शिल्प का परिचय प्राप्त किया जा सकता है जो युग-प्रवृत्तियों को भी उद्घाटित करते हैं। प्रमोद वर्मा प्रगतिशील धारा के कवि और विचारक हैं। अशोक वाजपेयी अपने विशिष्ट शिल्प और मुद्रा के कारण चर्चित रहे हैं। श्रीकान्त जोशी भी स्थापित कवि हैं। इन तीनों की रचनाओं में काव्य के अद्यतन रूप की झलक देखी जा सकती है। इनके अलावा अन्य कवियों की कृतियां भी सम्मिलित हैं जो काव्य के बहुआयामी और बहुव्यापी संसार से जोड़ती हैं। इनके अतिरिक्त तीन महाकाव्य भी लिये गये हैं जिनसे पता चलता है कि रामायण और महाभारत तथा चिन्तन को आधार बनाकर महाकाव्य रचना की परम्परा अविच्छिन्न रूप से चल रही है।

संग्रह में शहरी और बड़ेपन का आग्रह कतई नहीं रहा है। मेरा मानना है कि ग्रामीण क्षेत्रों में श्रेष्ठ और समर्थ प्रतिभाओं का अभाव नहीं है। मैंने कई ऐसे ग्रामीण रचनाकारों की कृतियों को भी लिया है जो राष्ट्र व्यापी ख्याति का अवसर भले न पा सके हों, पर वे किसी से कम नहीं है। समीक्षकों, प्रकाशकों और पाठ्यक्रमीय विद्वानों को अपनी मानसिकता में परिवर्तन करना चाहिये।

इनके अतिरिक्त अपने-अपने युग की दो प्रतिनिधि नाट्य कृतियां भी हैं जो अपनी नवीन टेकनीक से समग्र का प्रतिनिधित्व करती हैं। कुछ निबंध तथा अन्य विषयों से संबंधित कृतियां हैं साथ ही शोध-प्रबंध भी। दो पुराने ग्रंथ कार हफ़ीज़ुल्लाह खाँ व पजनेस जैसे भी रखे गये हैं ताकि उस युग का भी थोड़ा आभास हो सके। कुछ शोध-प्रबंध भी शामिल हैं। मैं यह कतई नहीं कहता कि इसमें सम्मिलित रचनायें ही प्रतिनिधि रचनायें हैं और इनसे ही सम्पूर्ण साहित्य-जगत पहचाना जायेगा। इतना अवश्य है कि सभी कृतियां और कृतिकार जाने-पहचाने हैं। उनकी ये कृतियां साहित्य संसार की बानगी मात्र हैं।

सच बात तो यह है कि मेरे पास जो समीक्षात्मक आलेख उपलब्ध थे, उनमें से कुछ का चयन कर इसमें शामिल किया गया है। फिर भी इनसे हिन्दी की विकास यात्रा का थोड़ा बोध अवश्य होगा और संबंधित कृतियों को भली प्रकार समझा जा सकेगा। विश्वास है कि आपके निकट इनकी सार्थकता सिद्ध होगी।

डॉ. कृष्णदेव शर्मा, सार्थक प्रकाशन, दिल्ली ने यदि प्रकाशन में सहयोग न किया होता तो 'रचना से रचना तक' कृति अभी भी फाइलों में बिखरी पड़ी रहती। मैं उन्हें इसके लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं। लम्बे अरसे से फाइलों में वंद इन आलेखों को कृति रूप में साहित्य जगत को सौंपते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

12-एम.आई.जी., चौबे कॉलोनी
छतरपुर (म.प्र.) 471001
रामनवमी
दिनांक 18 अप्रैल 2005

–डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
सेवा निवृत्त प्राचार्य

अनुक्रम

गणदेवता	11
भूले बिसरे चित्र	24
सागर लहरें और मनुष्य	31
विराटा की पद्मिनी	41
पुनर्नवा	50
राग दरबारी	58
बरामासी	66
जूठी पातर	72
कई अँधेरों के पार	76
साँड़	80
निशीथ	84
अनुपूर्वा	98
बहुत दिन बीते	111
क्योंकि मैं जानता हूँ	115
ब्रजभूमि	126
कविता दोस्तों में	132
एक पतंग अनन्त में	142
दुनिया रोज बनती है	150
पकी फसल के बीच	154
शब्द से आगे	161
खोखले शब्दों के खिलाफ	165
रस-वृन्दावन	171
चेतना-सेतु तुलसी	183
मूक भाटी	187
दधीचि महाकाव्य	200
साध्वी द्रौपदी	207

बीतक	215
स्कन्दगुप्त	222
लहरों के राजहंस	227
लेखक की जमीन	236
हिन्दू होने का धर्म	239
इक्कीसवीं शताब्दी की हिन्दी	247
भिखारीदास का आचार्यत्व	251
रीतिकालीन कवि रूप साहि : आचार्य और कवित्व	257
सुमित्रानन्दन पंत : वैचारिक व्यक्तित्व	261
हफीजुल्ला खाँ और उनका हजारा	265
पजनेस और उनका पजनेस प्रकाश	271

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त "बरसैया"

जन्म स्थान : भौरी (जिला बाँदा—अब चित्रकूट उ.प्र.)
जन्म तिथि : 6 फरवरी, 1937
पद : सेवानिवृत्त स्नातकोत्तर प्राचार्य
योग्यता : एम.ए. (हिन्दी)।
पी.एच-डी. (सन् 1064) जबलपुर विश्वविद्यालय, विषय : हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार।
कृतियां : हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार (शोध-प्रबंध), छतीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार, आधुनिक काव्य-संदर्भ और प्रकृति, हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार, बुन्देली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, मानस मनीषा, बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार, चिन्तन अनुचिन्तन, अथ काटना कुत्ते का भइया जी को, रचना से रचना तक, कभी-कभी यह भी आदि उच्चकोटि की 25 पुस्तकें।
लगभग 220 शोध-परक निबंधों का देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन।
12 शोध छात्रों को निर्देशन में पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त।
अब तक 20 लघुशोध प्रबंध निर्देशन में प्रस्तुत।
नव-ज्योति 'संज्ञा', सर्जना तथा 'बन्धु' पत्रिकाओं का संपादन।
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, जीवाजी विश्वविद्यालय के पंजीकृत शोध-निर्देशक, परीक्षक आदि।
सम्मान : साहित्य सम्मेलनों, नगरपालिकाओं, हिन्दी प्रचारिणी सभा आदि द्वारा साहित्य श्री, तुलसी पुरस्कार, विद्रोही पुरस्कार, साहित्य भारती आदि पुरस्कारों से अलंकृत।

सार्थक प्रकाशन
100 ए, गौतम नगर, नई दिल्ली-110 049

ISBN 81-8160-035-5
9 788181 600356

Price : Rs. 300/-